265

16

Code number - 16

यहाँ एक नदी बहती थी

यहाँ एक नदी बहती थी,
कल-कल बहकर सबकी
आँखों को राहत पहुँचानेवाली
नदी थी वह...
वह नदी थी - सरस्वती...

जैसी ही नाम, वैसी ही काम
कितनी पवित्र, कितनी पुण्य थी वह
देखते ही हो जाए हर
किसी की दिलों में सुकून की बारिश ....

उसकी कल-कल आवाज सुनकर
आरंभ करता किसान का दिन
उसकी एक झलक से ही
भर जाती हर नारी की दिल

उस नदी की एक-एक बूँद
थी मीठी जैसी शहद
तैरते बच्चों की शिक्षक थी वह...
रंग-बिरंगे मछलियों की प्राण थी वह ....
हर किसी के लिए माँ थी वह...

पहाड़ की बर्फ़ीली चट्टानों से
शुरु होती थी उसकी सफ़र
फिर झंझट होकर आती थी
वह एक प्यारे फरिश्ता बनकर

कभी-कभी शांति की मूर्तिरूप थी वह..
तो कभी-कभी संहाररूपिणी थी वह...
हर दिन एक नए तेवर लेकर
सबको हैरान करती थी वह...
मछुआरों की जन्नत थी वह...

फिर पता नहीं चली
कब सब बदल गया...
पता ही नहीं चली
कब बदलाव की काली घनें
आसमान में गरजने लगी...

बदलाव की निरंतर बारिश ने
बदल डाली पूरी की पूरी गाँव को

गाँव के कोने-कोने में
अतिक्रमण आने लगी
अनगिनत फ़ाक्टरियाँ
विकास के नाम पर
छाने लगी वातावरण में
प्रदूषण की बदबू

Code number - 16

फ़ैक्टरियों से आने-वाली हर कूड़ा-कचरे
की डिब्बा बनी तू, मेरी सरस्वती ...
तेरी रंगत दुर्गंध बन गई
तेरी शहद जैसी मीठी पानी
बन गए करेले के जैसा ...
हर प्रहार से रोती रही तू
पर तेरी चीखें मशीनों की
कान-फटते आवाज़ के नीचे
दफ़न हो गई..

विकास और औद्योगिकरण की
काली पट्टी आँखें में बाँधकर
किसी ने भी नहीं देखा तेरी
टिप-टिप टपकती आँसुओं को.

धीरे-धीरे चलने लगी तू
मौत के भयानक दुनिया की ओर
शुरु हो गई तेरी एक नई
अदपाप अंदेशा की ओर

वक्त की घट जाने से
सूखने लगा नदी का पानी
धीरे-धीरे लोगों ने महसूस करने लगे
की बूढ़ा रही है नदी..

Code number (16)

खत्म हो रहा था, सबके सब
दौड़ रहे थे इधर-उधर पानी के लिए
वहाँ न था कोई अमीर,
वहाँ न थी कोई गरीब
एक ही एक विचार में मग्न
थे [redacted] और वह थी 'पानी'...
गला सुखाकर चलती रही एक-एक जान
तब उठा एक नई आशा की सूरज
सरस्वती की बचाव करने मे;
एकजुट हो गए सबके सब
पर... देरी हो गई थी
बहुत देरी करदी लोगों ने,
चली गई सरस्वती अपनी
अझ्यातवास में जमीन की गहराइयों की ओर...

आज भी लोग नहीं भुला पाए
इस बेहद बड़ी बेवकूफी को...
इसीलिए आज भी दोहराती
है वह यही कहानी की
'यहाँ एक नदी बहती थी'... !